शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अण्डमान की हिन्दी कविताओं में सांस्कृतिक चेतना

डॉ. रत्ना कुशवाह
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय,
पोर्टब्लेयर, अण्डमान, भारत

शोध संक्षेप

आर्यों के आने के बाद से और मुस्लिम विजय तक हमारे देश में पश्चिमोत्तर और पूर्वोत्तर से असंख्य लोग आये। लेकिन भारत की संस्कृति अनेक शासकों के बदलने के बाद भी वैसी ही रही। यहाँ आये लोग इसी संस्कृति में समा गये। अण्डमान-निकोबार के रहवासियों ने हमारी संस्कृति को एक अलग पहचान दी है। जातीय , सामुदायिक और साम्प्रदायिक सौहार्द को यहाँ एक अनुकरणीय समरसता मिली है। प्रस्तुत शोध पत्र में अंडमान निकोबार द्वीप समूह के काव्य में सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन किया गया है

भूमिका

संस्कृति को परिभाषित किया जाय तो कहा जा सकता है कि "समाज की संस्कारयुक्त कृति को ही संस्कृति कहा जा सकता है। "1 अर्थात् विश्व में जो कुछ सर्वश्रेष्ठ कहा गया है , जाना गया है, उससे अपने आप को परिचित कराना। संस्कृति में गतिशीलता है। हम उसे लक्षणों से ही जान सकते हैं। यह सभ्यता से अलग है। सभ्यता हमारे पास होती है जबकि संस्कृति हममें व्याप्त रहती है। संस्कृति की रचना सौ-पचास साल में नहीं की जा सकती। शताब्दियों तक एक समाज के लोग किस तरह खाते-पीते , रहते-सहते, पढ़ते-लिखते, सोचते-समझते और राजकाज चलाते या धर्म-कर्म करते हैं , उस सबसे मिलकर उनकी संस्कृति बनती है। वह रोज़ बदलती भी नहीं बल्कि हमेशा हमारा पीछा करती है। यह आदान-प्रदान से बढ़ती है। शत्रुता-मित्रता , व्यापार और नित के पारस्परिक कार्य-व्यापार से प्रभावित होती है। उस देश और समाज को उतना ही शक्तिशाली और महान् समझा जाता है जिसने विश्व के जितने अधिक देशों और समाजों की संस्कृतियों को खुद में समाहित किया होता है। इस लिहाज से 'भारत' इसका सबसे बड़ा और अकेला उदाहरण है। जिसने अपने भीतर की विविध संस्कृतियों के साथ ही बाहरी , प्राचीन से नयी संस्कृतियों तक को खुद में समाहित किया है।

हिंदी कविता में संस्कृतिक चेतना

भारत की संस्कृति का एक बिरला उदाहरण हम देखें तो 'अण्डमान निकोबार द्वीप ' समूह है। जिसमें भारत वर्ष की जीवन शैलियों , रीति-रिवाजों, आस्था-विश्वासों, भाषा और बोलियों को अपने लघु कलेवर में सँजोये हुए 'लघु भारत' कहा जाता है। विभिन्न सांस्कृतिक और भाषायी परिवेश में स्नेह , सहयोग, परदुःखकातरता, करुणा आदि का पल्लवन-पुष्पन यहाँ की सहज विशेषता है। यहाँ विभिन्न भाषा-भाषियों ने अपने सांस्कृतिक अस्तित्व को बचाए रखने के लिए वर्षों संघर्ष किया है। तमिल , तेलुगू, मलयालम, मराठी, गुजराती, उर्दू, बंगला, पंजाबी भाषियों की

जिजीविषा ने कला साहित्य और संस्कृति की परम्परा को आकार देने में अपनी-अपनी भूमिका बड़ी ईमानदारी से निभाई है। यह लघु भारत नाम से जाना जाता है। जिसे हम जगदीश नारायण राय के कविता संग्रह 'द्वीपायन' की माटी कविता की पंक्तियों में देख सकते है-

शहीदी गीत का गुंजन सुनाती रात दिन घाटी।
नमन, शत-शत नमन चंदन है मेरे द्वीप की माटी।2

इसी तरह मन्दिर-मस्जिद , गिरजे और गुरुद्वारे की एकता का वंदन का स्वर भी हमें सुनाई देता है -

गले खुलकर मिले , मंदिर ने मसज़िद ने कसम खायी
कहा गिरजे ने गुरुद्वारे से हम सब एक हैं भाई।
हमारी एक है संस्कृति, हमारी एक है धाती।
हमारी भाग्य की रेखा, हमारी एक है माटी।3

विभिन्न सांस्कृतिक और भाषायी परिवेश में स्नेह, सहयोग, परदुःखकातरता, करुणा आदि का पल्लवन-पुष्पन यहाँ की सहज विशेषता है। इन विशेषताओं, गुणों और भावों को आधार बनाकर यहाँ के कवियों ने मार्मिक कविताएँ लिखी हैं जिसे हम 'अण्डमान की हिन्दी कविता काव्य संग्रह की कविता' 'विजगीषु' में दिखाई देता है-

काले पानी की कारा में
अब पहुँच चुका हूँ मैं भाई।
माता को मुक्त कराने का,
उत्साह उमड़ता है भाई।
हर कोड़े पर माता की जय,
अनुगूँज सुनायी देती है।
हर रोज यहाँ पर मुक्ति पर्व,
संगीत सुनायी देता है।4

अण्डमान-निकोबार के रहवासियों ने हमारी संस्कृति को एक अलग पहचान दी है। जातीय , सामुदायिक और साम्प्रदायिक सौहार्द को यहाँ एक अनुकरणीय समरसता मिली है। जिसे हम इन पंक्तियों में अभिव्यक्त कर सकते हैं -

समता ममता धर्म द्वीप आलोक पुंज है प्यारा
बापू के सपनों का लघु भारत है यही हमारा,
क्षेत्र, जाति, धर्म, भाषा की यहाँ नहीं लड़ाई,
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई करते संग सगाई,
मिल एक साथ सबने यहाँ नव चेतन ज्योति जलाई।।5

जिस प्रकार संस्कारों से सम्पन्न व्यक्ति अपनी आत्म प्रतिमा निर्मित करता है , वैसे ही समाज अपने सामूहिक संस्कारों की अभिव्यक्ति से निर्मित एक प्रतिभा स्वीकार कर लेता है। वह प्रतिभा ही उसकी संस्कृति बन जाती है। उसी प्रकार अण्डमान की कविता में अण्डमानी जनजाति की लोककथाओं और लोकगीतों को स्मरण कर लुप्त हो रहे संस्कारों के प्रति चिन्ता व्यक्त की है। रचनाकार को 'बिलुकु' की याद आती है -

ओलेह ओक किलेयेत,
खोथ तवार चोवले खुले,
मियाब रोबले बुले,
मेये थम कोकबल
बिना फुरे को पेह।।6

इन पंक्तियों में कहा गया है कि ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही हैं। हमने अपनी होरी बालू की ओर मोड़ ली है। तूफान को रोकिए। हमें मछली पकड़ने में मदद दीजिए।

सभी लोकों में आदिवासी लोक अलग है। वाचिक परम्परा में, सुर-लय में, जीवन-यापन में, आस्था और विश्वास में, मान्यता और मनौती में, संस्कार में, प्रकृति की सहजता में, रहस्यों के घेरे में, गीत-संगीत में, मन बहलाव में और ऐसे ही अनेक विचार-व्यवहार, जल-जंगल तथा जड़-चेतन में।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अण्डमान के आदिवासी भी इससे भिन्न नहीं है , उनके भी अपने संस्कार हैं , ईश्वर है तथा शिक्षा का प्रचार-प्रसार भी है , उनके एक गीत में उनके शिक्षा-संस्कार का परिचय मिलता है -

इ नुपें हे कमी भी
ञाम तो मन हे एल मि ञाम
हकप हे एल इनकप।
रमलोन इ थिप त रमलोन
हरिबलोन हे एल नुप मिरीबलोन।।
पुत्रपु हे एल नुप कनिहडेंन
हडेनलोन हे एल नुप हनडेंन।।
आसा तेरे, हनोलतरे
हरोडतरे, हमलतरे।।7

इस शिक्षाप्रद लोकगीत का अर्थ है खेलते समय खेलना चाहिए , पढ़ते समय पढ़ना चाहिए तथा सुख के साथ सुखी रहना चाहिए एवं गम के अवसर पर रोना , प्यार के वक्त प्यार करना चाहिए तथा जैसा भी हो वैसा ही रहना चाहिए , समानता पर घुल-मिलना चाहिए।

अण्डमानी लोकगीत संस्कारों की दिप्ती से जगमगा उठा है जैसे वह व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण कर रहा हो , संस्कारों की जातीय अभिव्यक्ति को संस्कारित कर रहा हो।

सामाजिक संस्कारों को धार्मिक संस्कार भी कहा जाता है। धर्म को आचरण का नीतिशास्त्र समझा गया उसी से व्यक्ति का आचरण शुचितापूर्ण और सामाजिक दायित्व-बोध के प्रति सजगतापूर्ण रहता है। लोक-जीवन में आचरित तत्वों को देखकर समझा जा सकता है कि व्यक्ति का निर्माण किन संस्कारों से हुआ और समाज के उन संस्कारों की सामूहिक अभिव्यक्ति से कैसे संस्कृति को सम्पन्न और समृद्ध किया गया।

अण्डमान में संस्कृति स्वतः ही विकसित होती गई है। वहाँ किसी भी प्रकार का मतभेद हमें दिखाई नहीं देता बल्कि आपसी प्रेम और एकता की भावना ही दृष्टिगोचर होती है। अंग्रेजों और जापानियों के अत्याचार सहने के बावजूद भी यहाँ के लोगों ने आपसी सामंजस्य खोया नहीं है जिसकी अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में अनुभव कर सकते है -

भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी हैं हम , अण्डमान के वासी हैं।
दुनिया वाले आकर देखें, हम भारत के वासी हैं।
होली-दिवाली, ईद का, कैसा सुन्दर खेल है देखो
संस्कृति का संगम स्थल, अयप्पा वेल-वेल मेल है देखो
रथयात्रा का हुजूम देखो, क्रिसमस केरोल की धूम है देखो।
शहीदों की ये पावन भूमि , शत्-शत् करें इसे अभिनंदन
माथे लगाओ इसकी माटी , बार-बार है इसका वन्दन
भाई चारे का पाठ पढ़ाती , सबको अपने गले लगाती।
भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी है हम अण्डमान के वासी हैं।।8

उपर्युक्त पंक्तियों में संस्कृति ही समाज को सूत्रबद्ध किये हुए दिखाई देती है।

अण्डमान की संस्कृति समन्वय व आस्थावादी प्रतीत होती है। उसने सामंजस्य का गुण सीखा है। क्योंकि अण्डमान में सभी धर्म व जाति के लोग आए, उसने उन सभी के साथ समन्वय रखा किन्तु जब अंग्रेजों ने हमारी संस्कृति और धर्म को नष्ट करने की कोशिश की तो उसने उसका विरोध भी किया और जोर दिया कि अंग्रेजों को हमारे देश से बाहर जाना ही होगा और इस प्रयत्न को हमारे शहीदों ने सार्थकता की ओर पहुँचाया भी, जिसे हम 'अण्डमान के स्त्री स्वर '

काव्य संग्रह की कविता अण्डमान में महसूस कर सकते है -

ये मेरी जन्मभूमि, कर्मभूमि है अण्डमान,
इस मिट्टी की गोदी में पलकर पुलकित होता मेरा मान।
शहीदों की यह भूमि स्वतंत्रता की बेदी है,
सबसे पहले इस धरती को मिली आजादी है।9

कवि तो इस धरती को गुरुता की अधिकारी तक स्वीकार करता है वह उसके यशोगान में कहता है -

ये धरती है गुरुता की अधिकारी,
यहाँ शहीदों को भी विपदाएँ थी प्यारी।।10

अण्डमान का साहित्यकार अण्डमान को माता-पिता की संज्ञा देता है। जिसे देखकर हम विचार कर सकते है कि यहाँ के लोक जीवन का निर्माण किन संस्कारों से हुआ होगा और समाज के इन संस्कारों की सामूहिक अभिव्यक्ति से कैसे संस्कृति को सम्पन्न और समृद्ध किया गया है जिसका एक सशक्त उदाहरण ये पंक्तियाँ दिखाई देती है -

अण्डमान एक माँ का रूप है,
निकोबार एक पिता का रूप है,
शेष द्वीप छोटे-छोटे बच्चे है,
जी रहे हैं सब मिलजुल कर
मानों सभी एक माला में गुथें हुए फूल
एक ही परिवार में राम, रहीम और मेरी
प्यार से प्यारा बनाते सम्बन्ध।।11

साहित्य और कलाएँ मानवीय संस्कृति से उत्पन्न होती है। मानवीय सृजनात्मकता किसी एक देश या परिवेश में विकसित होकर भी सम्पूर्ण मानवता की देन और उसी की निधि होती है। यही कारण है कि साहित्य और कलाएँ सीमित अर्थ में राष्ट्रीय होकर भी सदा अन्तरराष्ट्रीय या वैश्विक होती है। इसी कारण साहित्यकार और कलाकार किसी एक देश , किसी एक धर्म , किसी एक सम्प्रदाय, किसी एक जाति या किसी एक भाषा से सम्बन्धित होकर भी केवल उसी के नहीं होते। वे सम्पूर्ण जगत् और सम्पूर्ण मानवता के होते हैं। अण्डमान के साहित्यकार की भी यही विशेषता है वह रहता उस द्वीप में है पर उसके चिन्तन का क्षेत्र पूरा देश है। उसकी कृतियों की आवाज देश और काल की सीमाएँ लाँघकर मानवीय संस्कृति को समृद्ध बनाती हुई सम्पूर्ण मानवता की थाती बनती हैं -

शहीदी गीत का गुंजन सुनाती रात-दिन घाटी।
नमन शत-शत नमन चंदन है मेरे द्वीप की माटी।।
जहाँ चिंग्घाड़ता पानी तो पत्थर काँप जाता है।
कहीं सागर में कोरल फूल बनकर मुसकराता है।।
जहाँ हर ईद से स्वाधीनता की है झलक आती,
कड़ी है बज्र से बढ़कर सेल्यूलर जेल की छाती।।
गले खुलकर मिले मंदिर ने मस्जिद ने कसम खायी
कहा गिरजे ने गुरुद्वारे से हम सब एक हैं भाई।
हमारी एक है संस्कृति, हमारी एक है धाती।
हमारी भाग्य की रेखा, हमारी एक है माटी।।12

यही है वह संस्कृति जो साम्प्रदायिकता से लड़ सकती है और उसके अमानवीय तथा मानव-विरोधी चरित्र को सामने लाकर उसे परास्त कर सकती है। क्योंकि अण्डमान में जाति या धर्म के नाम पर संघर्ष नहीं है जो समस्याएँ हमारे देश में चारों ओर दिखाई देती है उससे अण्डमान परे है। वहाँ एक ही घर में हिन्दू , मुस्लिम, सिख, ईसाई मिल जाते हैं। वहाँ की संतान एक उन्मुक्त परिवेश में जीती है। वह साम्प्रदायिक भावनाओं से कोसो दूर है। अण्डमान की संस्कृति तो उन्हें जीवंत बनाती है , सच्चा मनुष्य बनाती है और उसे मानवता के सुखद तथा सुन्दर भविष्य के

निर्माण की ओर ले जाती है। उन्हें राजनीति एवं धर्म से अलग करके जीवन की गुणवत्ता , सृजनात्मकता तथा मानवीय मूल्य से आच्छादित करती है। यह संस्कृति धर्म का निषेध नहीं करती बल्कि वह तो विभिन्न धर्मों के शांतिपूर्ण सहअस्तित्व में विश्वास करती है।

वह इस वास्तविकता को स्वीकार करती है कि दुनिया में विभिन्न धर्मों को मानने वाले, विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले, विभिन्न प्रकार के खान-पान, रहन-सहन और रीति-रिवाजों वाले लोग शान्ति, सद्भाव, सहिष्णुता, सहयोग आदि के साथ रह सकते है। यह हम अण्डमान के कवि डॉ. गोविन्द पंवार की कविता 'अण्डमान के वासी' में महसूस कर सकते हैं -

भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी हैं हम , अण्डमान के वासी हैं।
दुनिया वाले आकर देखें, हम भारत के वासी हैं।।
अण्डमान की छटा निराली , चारों ओर छाई हरियाली।
कानन-उपवन मन को मोहते, कितने सुन्दर पक्षी सोहते,
ऊँचे वृक्ष मेघों को बुलाते , धरती की प्यास बुझाते।।
होली-दिवाली ईद का, कैसा सुन्दर खेल है देखो
संस्कृति का संगम स्थल , अयप्पा वेल-मेल है देखो।
रथयात्रा का हुजूम देखों, क्रिसमस केरोल की धूम है देखो।।
भाईचारे का पाठ पढ़ाती , सबको अपने गले लगाती।।13

उपर्युक्त पंक्तियों में बड़ा या छोटा, ऊँचा या नीचा जैसी भावना न होकर मनुष्य होने के नाते 'सब समान' है और उनके बीच समता का व्यवहार ही मानवीय संस्कृति है, यही दृष्टिगोचर होता है।

आज हम देखते हैं कि राजनीति और वैश्वीकरण की आंधी ने न केवल राष्ट्र प्रेम और देशभक्ति की परिभाषाएँ बदल दी है। संस्कृति को हिलाकर रख दिया है। ऐसे में अण्डमान की संस्कृति 'सेल्यूलर जेल के रूप में ' एक आधार स्तम्भ बनकर खड़ी हुई है। जिसे देखकर हर हिन्दुस्तानी का सीना चौड़ा हो जाता है और वह देशभक्ति और देशप्रेम से भर जाता है। यह भारत की भावी पीढ़ी का मार्गदर्शक है , जहाँ भारतवासी अपनी श्रद्धा-सुमन व्यक्त करते हैं तथा नतमस्तक होकर वीरों को याद करते हैं। आज अण्डमान देश की शोभा है तथा वीर-वीरांगनाओं की तपोभूमि भी है। कवि जगदीश नारायण राय ने अपनी रचना में सेल्यूलर जेल की मिट्टी का गौरव व्यक्त किया है -

सेल्यूलर की मिट्टी पावन
मुझसे महान भू और कौन ?
यहाँ त्याग शहीदों का देखा,
सोचो कुछ क्षण हो शांत मौन।।14

अण्डमान की कवि संस्कृति को 'सारभूत' अर्थ प्रदान करते हैं। वह भौगोलिक न होकर लोकमानस को महत्त्व देते हैं। वह 'समन्वय तथा समरसता' जैसे सिद्धान्तों की समीक्षा करते हैं। वह प्रतिपादित कर देते हैं कि संस्कारों की दीप्ति व्यक्तित्व का निर्माण कर सकती है। उसके जीवन के विशिष्ट रूपों को निखारते एवं उत्कृष्टता प्रदान करने के लिए कला , साहित्य, रीति-रिवाज, परम्परा, आचरण जैसे अभिव्यक्ति के माध्यमों का अध्ययन करना आवश्यक है। व्यक्ति के आचरण तथा दायित्व-बोध के प्रति सजगतापूर्ण व्यवहार एक साहित्यकार को ही करना होगा जो उसे संस्कृति के खुले रूप अण्डमान की तरह समग्रता की ओर ले जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ

1.नवनीत (संस्कृति के सात सुर) सं. विश्वनाथ सचदेव प्राचीन भारतीय विद्याभवन , क. मा. मुनशी मार्ग , चौपाटी, मुम्बई - 400007, वर्ष - 1, अंक 11, जुलाई 2016, पृष्ठ 40.

2.द्वीपायन - जगदीश नारायण राय प्र. हिन्दी साहित्य कला परिषद् पोर्टब्लेयर - 744101, सं. 2004, पृष्ठ. 9.

3.वही, पृष्ठ9.

4.अण्डमान की हिन्दी कविता - सं. डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी, प्र. हिन्दी साहित्य कला परिषद्, पोर्ट ब्लेयर - 744101, सं. 2004, पृष्ठ80

5.वही, पृ. 94.

6.अण्डमान निकोबार की जनजातीय बोलियों का भाषिक अध्ययन , डॉ. रामकृपाल तिवारी , साक्षी प्रकाशन, दिल्ली - 110032, प्रथम सं. 2003, पृष्ठ 39

7.वही, पृष्ठ 100.

8.शहीद एवं स्वराज द्वीपों का साहित्य - सं. डा॔. विश्रान्त वसिष्ठ, प्र. निहाल प्रकाशन, दिल्ली - 110094, प्रथम सं. 2013, पृष्ठ 102.

9.अण्डमान के स्त्री स्वर - सम्पादक डी. एम. सावित्री, प्र. हिन्दी साहित्य कला परिषद् पोर्ट ब्लेयर - 744101, सं. 2015, पृष्ठ31.

10.वही, पृष्ठ 31.

11.वही, पृष्ठ 58.

12.अण्डमान की हिन्दी कविता - सं. व्यासमणि त्रिपाठी, हिन्दी साहित्य कला परिषद् , पोर्ट ब्लेयर - 744101, सं. 2004, पृष्ठ70.

13. शहीद एवं स्वराज द्वीपों का साहित्य - सं. डा॔. विश्रान्त वसिष्ठ, प्र. निहाल प्रकाशन, दिल्ली - 110094, सं. 2013, पृ. 102-103.

14.द्वीपायन - जगदीश नारायण राय , प्र. हिन्दी साहित्य कला परिषद् , पोर्ट ब्लेयर, 744101, प्रकाशन वर्ष. 2004, पृष्ठ 21.